3
कहानियाँ
(इरम कमाल)

मैं एक हिन्दी लेखिका हूँ। यूँ तो मैं अनेक विषयों पर कहानियाँ और कविताएं लिखती हूँ, परन्तु मुझे सबसे अधिक आनंद बच्चों के लिए लिखने में आता है।

इसीलिए मैंने बच्चों के मनोरंजन को ध्यान में रखते हुए कहानियों की एक श्रंखला लिखी है, जिसका शीर्षक है

“3 कहानियाँ”

इस श्रंखला की यह मेरी पहली पुस्तक है। मुझे आशा है कि बच्चों को इसे पढ़ने में मज़ा तो आएगा ही, साथ ही उन्हें कुछ ना कुछ सीखने का मौक़ा भी मिलेगा।

धन्यवाद

(इरम कमाल)

Contact: iram.kamaal@gmail.com

Content

“घमंड का कीड़ा”

बच्चों एक समय की बात है। एक जंगल में कई प्रकार के जानवर और रंग-बिरंगे पक्षी रहते थे। जंगल का राजा था बब्बर शेर। इस शेर की एक विशेषता थी कि वह शाकाहारी था। उसका मानना था कि रक्षक को कभी भक्षक नहीं बनना चाहिए। यदि वह अपनी प्रजा अर्थात पशु-पक्षियों को खाने लगता तो उसका यह हरा-भरा मासूम जानवरों से सजा जंगलरूपी साम्राज्य समाप्त हो जाता। इसीलिए वह भी अन्य जीव-जंतुओं की तरह घास-फूँस व जंगली फल खाता और सबके साथ मिलकर मज़े से रहता। यही कारण था कि जंगल में रहने वाले सभी जानवर बेफ़िक्र होकर इधर-उधर घूमते फिरते थे। हिरण कुलांचे भरते हुए शेर महाराज के आगे से निकल जाते, खरगोश शेर के साथ आँख-मिचौली खेलते तथा चिड़िया, कोयल आदि सुरीली आवाजों में गातीं। सभी जानवर ऐसी प्रजा के समान थे जो भय-मुक्त होकर अपने राजा के संरक्षण में रहते थे। ऐसा था यह खुशियों से भरा जंगल।

फिर एक दिन इस जंगल पर एक विपदा आन पड़ी, अचानक जंगल में आग लग गई। सभी जानवर घबराकर इधर-उधर भागने लगे। जिसको जिधर रास्ता दिख रहा था, भाग रहा था। पक्षी अपने बच्चों, अण्डों और घोंसलों की रक्षा की चिंता में लगे थे। आग थी कि बढ़ती ही जा रही थी। जंगल में एक बार आग लग जाए तो उसे बुझाना कठिन हो जाता है। समझ में नहीं आ रहा था कि क्या किया जाए। सबसे अधिक चिंता शेर को थी, वह नहीं चाहता था कि उसके जानवर और यह जंगल यूं आग की भेंट चढ़ जाएँ। आग बुझाने का कोई तरीक़ा समझ में नहीं आ रहा था। तभी अचानक हाथी को एक युक्ति सूझी। वह जल्दी से गया और जंगल के बाहर बहती नदी से अपनी सूंड में पानी भर लाया और भड़कती आग पर डालने लगा। जंगल के जानवर जो आग लगने पर सहमे हुए एक जगह जमा थे, हाथी की इस समझ से भरी कार्यवाही को हैरानी से देखने लगे। हाथी जल्दी-जल्दी पानी भरकर सूंड में लाता और आग पर डाल देता। चार-पाँच चक्करों में ही आग बुझ गई। आग बुझते ही सारे जानवर खुशी से नाचने लगे। सभी अपनी-अपनी बोलियों में हाथी को धन्यवाद दे रहे थे।

शेर ने कहा, “गजराज, यदि आज आप ना होते तो यह जंगल तबाह हो जाता और हम सब जलकर राख हो जाते। आज आपके ही कारण हम सबकी जान बची है। आपका कोटि-कोटि धन्यवाद।”

हाथी जो कि पहले ही अपने इस कारनामे पर इतराया हुआ था, अब जो उसने शेर महाराज का धन्यवाद सुना तो गर्व से उसका सीना और चौड़ा हो गया। होना तो यह चाहिए था कि अपनी इतनी प्रशंसा सुनकर हाथी प्रत्युत्तर में उन सबको धन्यवाद देता, किन्तु ऐसा नहीं हुआ। इसके विपरीत घमंड का एक बीज उसके मन-मस्तिष्क में उग आया। वह सोचने लगा कि यह सब जानवर यहाँ तक कि शेर भी उसके आगे नगण्य हैं। यदि आज मैं ना होता तो सभी जानवर जलकर मर जाते। मेरे ही कारण आज यह जंगल

जीवित जानवरों से भरा है। इस विकृत सोच ने हाथी की विनम्रता को समाप्त कर दिया और उसका स्थान घमंड ने ले लिया। अब वह पहले जैसा नहीं रहा था। आते-जाते वह जानवरों को तंग करने लगा। सबको अपने से नीच मानने के कारण वह किसी का भी ख्याल नहीं करता था। पक्षियों के घोंसलों वाले पेड़ जानबूझ कर अपनी सूंड से हिलाता और जब उसमें बैठे नन्हे-नन्हे बच्चे डरकर चीखते तो उनकी चीखो पर वह खूब हँसता। कभी वह किसी छोटे जानवर को अपनी सूंड पर उठा कर डराता और उसके डरे हुए मुहँ को देखकर मज़े लेता। उसकी यह हरकतें दिनों-दिन बढ़ती ही जा रही थीं। कोई कुछ नहीं कर या कह सकता था क्योंकि हाथी ने उनकी जान बचाकर उन पर उपकार जो किया था। बेचारे जानवर! वो हाथी के इस उपकार को भूले नहीं थे और हाथी उनकी इसी विनम्रता का फ़ाएदा उठा कर उन्हें परेशान कर रहा था।

एक बार जब हाथी दूसरे जंगल अपने संगी-साथियों से मिलने गया हुआ था, तो सभी जानवरों ने इस अवसर का लाभ उठाया और एकत्र होकर शेर के पास पहुंचे और उसे बताया कि हाथी किस प्रकार उन्हें परेशान कर रहा है। शेर सोच में पड़ गया कि क्या किया जाए? कैसे हाथी को बताया जाए कि वह जो कर रहा है सही नहीं है। यदि ऐसा ही चलता रहा तो सभी जानवर इस जंगल को छोड़कर दूसरे जंगल में रहने के लिए चले जाएंगे। ऐसा क्या उपाय किया जाए कि हाथी अपनी यह बदली प्रवृत्ति छोड़ कर पहले जैसा विनम्र व सहायक स्वभाव का हो जाए। सभी सर झुकाए इस समस्या पर विचार कर ही रहे थे कि तभी एक छोटी सी आवाज़ आयी।

“महाराज, मैं कुछ करूँ?”

“अरे, तुम क्या करोगी चींटी रानी? जब इतने बड़े-बड़े जानवर कुछ नहीं कर पा रहे?” - भालू ने जैसे उसका मज़ाक़ उड़ाया।

“जब तलवार से काम ना बने तो सुई का आश्रय लेना ही पड़ता है।” – चींटी ने जवाब दिया।

“तुम्हारे पास कोई युक्ति है तो बताओ?” – शेर ने कहा।

फिर जो योजना चींटी ने उन सबको बतायी, उसे सुनकर सभी के चेहरे खिल उठे। अब वे सब हाथी के लौटने की प्रतीक्षा करने लगे। हाथी अगले दिन लौट आया।

चींटी अपनी योजना पर अमल करने के लिए हाथी के सोने की प्रतीक्षा करने लगी। जब हाथी सो गया तो चींटी चुपके से उसकी सूंड मे घुसकर बैठ गई। हाथी सोकर उठा और जंगल में घूमने निकल पड़ा, सोचा चलो जानवरों से छेड़-छाड़ कर और उनको डरा कर ज़रा हंसा जाए। लेकिन यह क्या ! जैसे ही वह चला उसे लगा कि उसकी सूंड में कुछ चुभन सी हो रही है। मानों कुछ काट रहा हो।

“कहीं कोई बिच्छू तो मेरी सूंड में नहीं घुस गया?” - हाथी बड़बड़ाया।

उसने अपनी सूंड को ज़ोर से पटका कि यदि बिच्छू हुआ तो बाहर निकल आएगा। किन्तु

बिच्छू होता तो निकलता। वह तो चींटी थी जो उसकी सूंड के मांस में ऐसी धंस कर बैठी थी कि हाथी की लाख कोशिश करने पर भी नहीं निकल सकती थी। वह धीरे-धीरे हाथी को काट रही थी। हाथी की पीड़ा बढ़ती ही जा रही थी। वह बौखलाया हुआ जंगल में दौड़ रहा था। सभी जानवर उसे देख रहे थे, लेकिन कोई कुछ नहीं कर सकता था क्योंकि योजनानुसार हाथी को जब तक अपनी ग़लती का एहसास नहीं हो जाता और वह सबसे क्षमा नहीं मांग लेता तब तक चींटी को सूंड में ही रहना था।

असहनीय पीड़ा से तंग हाथी शेर के पास पहुँचा।

"शेर महाराज, मुझे बचाइए। कोई चीज़ मुझे अंदर ही अंदर काट रही है।"

"बिच्छू होगा।" – शेर बोला।

"बिच्छू नहीं है, यह तो कुछ और है जो मैं समझ नहीं पा रहा हूँ। बस पीड़ा है कि बढ़ती ही जा रही है। महाराज आप ही मुझे इस पीड़ा से मुक्ति दिला सकते हैं।" – हाथी ने शेर कहा।

"गजराज तुम अब भी नहीं समझे कि तुम्हें कौन सा जीव काट कर पीड़ा पहुँचा रहा है?" – शेर ने कहा।

"नहीं शेर महाराज, आप ही बताइए कौन सा कीड़ा है? यह मेरी सूंड से कैसे बाहर निकलेगा?" – हाथी ने पूछा।

"तुम्हें घमंड का कीड़ा काट रहा है, और तब तक काटता रहेगा जब तक कि यह तुम्हारे अंदर रहेगा।" – शेर ने जवाब दिया।

"अब मैं क्या करूँ, कैसे इसको बाहर निकालूँ? आप मुझे कोई उपाय बताइए महाराज।" – हाथी ने पूछा।

"इसका एक ही उपाय है, पश्चाताप और क्षमा। पहले तुम जंगल के सभी जीव-जंतुओं जिन्हें तुमने अकारण ही अपने क्षणिक सुख के लिए सताया है, उनसे माफ़ी मांगों कि तुम आगे से कभी इन्हें तंग नहीं करोगे। यह कीड़ा तभी तुम्हारे अंदर से बाहर निकलेगा।" – शेर ने कहा।

इतना सुनते ही हाथी उन सबके आगे झुक कर खड़ा हो गया और सबसे क्षमा मांगी और वादा किया कि अब वह कभी किसी को तंग नहीं करेगा। वह पहले जैसा ही विनम्र स्वभाव वाला बन जाएगा।

सूंड के अंदर बैठी चींटी ने जब यह सुना तो वह चुपके से बाहर निकल आयी। उसके बाहर आते ही हाथी की पीड़ा समाप्त हो गई। उसके लिए इतनी ही सज़ा काफ़ी थी। अब यह जंगल पुनः पहले की तरह हो गया था।

“एकता की शक्ति”

एक थी पेंसिल, एक थी रबर और एक था कटर। तीनों एक ही घर में रहते थे। रहते तो साथ-साथ थे परन्तु परस्पर लड़ते रहते थे।

पेंसिल – “यदि मैं ना होऊं तो बच्चे लिख ही नहीं पाएंगे।“

रबर – “और मैं ना होऊं तो ग़लत लिखे हुए को सही नहीं कर पाएंगे।“

कटर भला कैसे पीछे रहता, वह भी बीच में कूद पड़ा – “पेंसिल बहिन, क्यों भूलती हो कि मैं ही हूँ जो तुम्हें इतना सुंदर और नुकीला बनाता हूँ।“

तीनों हर जगह दिखते तो साथ-साथ थे परन्तु उनमें एकता का अभाव था। मिलजुल कर रहने की जगह तीनों हर समय अपने-अपने महत्व को दर्शाते रहते थे। उनकी हर समय की लड़ाई से घर का स्वामी भी परेशान हो उठा और तीनों को घर से बाहर निकालकर उसने एक नया सदस्य रख लिया। जिसका नाम था “पेन”।

“पेन” अकेला था, वह सुबह उठकर अपने मालिक के साथ काम पर जाता और शाम को लौट आता। अब घर में शांति थी।

दूसरी ओर पेंसिल, रबर और कटर अलग-अलग घरों में रहने के लिए चले गए। पेंसिल जो स्वयं पर इतराती थी कि बच्चे उसके बिना लिख ही नहीं सकते, अब रबर और कटर के साथ ना होने के कारण बच्चों, बड़ों सबसे डाँट सुनती।

सभी उसे झिड़कते – “उफ़्फ़ ! कितना खराब लिख रही है। रबर होती तो उससे साफ़ ही कर लेते।“

“सही कहते हो, इसकी तो नोक भी मोटी है, कटर होता तो उससे पेंसिल की नोक ही बना लेते।“

तभी एक बच्चे ने सुझाव दिया – “ऐसा करते हैं कि इसे ब्लेड से छील लेते हैं।“

फिर ज्यों ही उसने पेंसिल की गर्दन ब्लेड से छीलना शुरू की, पेंसिल दर्द से कराह उठी।

उसे कटर की याद आने लगी – “आह ! कटर मुझे कितने प्रेम से घूम-घूम कर छीलता था।

दूसरी ओर रबर और कटर भी उदास थे, उन दोनों को तो घरवाले कोई महत्व ही नहीं देते थे। दोनों को हर समय डाँट पड़ती रहती – “रबर और कटर तो किसी भी काम के नहीं हैं। केवल घर में जगह घेर कर बैठे हैं। पेंसिल साथ होती तो ये काम भी आते।“

फिर उन दोनों से तंग आकर घरवालों ने उन्हें उठाकर घर से बाहर फेंक दिया।

दूसरी ओर पेंसिल ने भी अपना घर छोड़ दिया और अपने पुराने साथियों को ढूँढने लगी। तीनों अलग-अलग भटकते हुए चले जा रहे थे कि तभी पेंसिल की नज़र कटर पर पड़ी,

उसने देखा कि साथ मे रबर भी खड़ी है। पेंसिल ने दौड़ कर उन दोनों को गले लगा लिया।

तीनों ने प्रण लिया कि अब वे आपस में कभी नहीं लड़ेंगे और तीनों मिलकर साथ-साथ प्रेमपूर्वक रहेंगे।

“पेड़ का भूत”

रात का समय था, जंगल में चारों ओर अंधेरा फैला हुआ था, चारों ओर सन्नाटा था। इस सन्नाटे में शेर की माँद से जानवरों के बोलने और हंसने की आवाज़ें आ रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो कोई दावत चल रही हो।

आज शेर के जुड़वा बच्चों का जन्मदिन था। शेर-शेरनी ने सभी जंगलवासियों को दावत पर बुलाया था। सभी उपहार और फूल लेकर उन्हें मुबारकबाद देने पहुंचे थे।

बच्चों ने केक काटा और सभी ने तालियाँ बजाकर अपनी प्रसन्नता को दर्शाया। फिर खाना आरंभ हुआ । खाना स्वादिष्ट था और सभी ने चाव से खाया। खाना खाते व बाते करते-करते रात बहुत हो गई थी। सभी ने शेर-शेरनी को दावत का धन्यवाद दिया और अपने-अपने घरों को वापिस चल दिए। सभी बतियाते हुए मगन चले जा रहे थे कि अचानक सामने वाले पेड़ पर दो आँखें चमकीं। सभी डरकर एक दूसरे से लिपट गए।

खरगोश – “यह क्या है भाई?”

भालू – “पता नहीं, ऐसा लग रहा है कि कोई हमें छिपकर देख रहा है।“

बंदर – “कहीं भूत तो नहीं?”

बस भई, फिर क्या था, भूत का नाम सुनते ही सभी जानवर सिर पर पैर रखकर भाग खड़े हुए ।

अगले दिन सुबह होते ही सभी जानवर शेर के पास पास पहुँचे ।

सियार बोला – “महाराज! रात को जब हम सब आपके घर से वापिस आ रहे थे तो रास्ते में हमने दूर से एक पेड़ पर दो आँखें चमकती हुई देखीं । “

शेर – “तुम सबको समीप जाकर देखना चाहिए था। “

सियार – “कैसे जाते महाराज, बंदर कह रहा था कि पेड़ पर भूत है।“

शेर – “भूत-प्रेत जैसी कोई चीज़ नहीं होती। रात होने दो, मैं तुम सबके साथ चलकर देखूँगा कि पेड़ पर क्या चमक रहा था?”

सभी रात होने की प्रतीक्षा करने लगे।

जैसे ही रात आयी, सभी जानवर शेर के पीछे-पीछे उस पेड़ की ओर चल पड़े। मन ही मन सबको डर लग रहा था कि अगर भूत हुआ तो क्या होगा?

शेर – “किस पेड़ पर आँखें चमक रहीं थीं?”

सभी एक स्वर में बोले – “महाराज, सामने वाले पेड़ पर।“

शेर ने देखा सचमुच वहाँ दो आँखें चमक रहीं थीं। वह पेड़ के समीप पहुँचा और ध्यान से

देखने लगा। और फिर जो शेर ने ज़ोर-ज़ोर से हँसना शुरू किया तो सभी जानवर हैरान होकर शेर को देखने लगे।

बंदर सियार के कान में बोला – "लगता है भूत ही है और महाराज भूत को देखकर पागल हो गए हैं।"

सियार – "मुझे भी ऐसा ही लगता है, चलो हम तो भाग लेते हैं।"

खरगोश – "क्या हुआ महाराज, आप हँस क्यों रहे हैं?"

शेर – "कौन कह रहा था कि पेड़ पर भूत है?"

बंदर – "मैंने कहा था महाराज।"

शेर – "इधर आओ, और देखो यह क्या है?"

बंदर मरता क्या ना करता। डर के मारे उसकी जान निकल रही थी लेकिन शेर का आदेश कैसे टालता। डरते-डरते वह पेड़ के पास पहुँचा और ध्यान से देखने लगा।

सियार – "क्या है बंदर भाई? बताओ तो?"

बंदर झेंपते हुए – "स्वयं ही देख लो।"

सभी जानवर पेड़ के समीप पहुंचे और देख कर ठहाके मारकर हंसने लगे।

पेड़ पर जुगनू थे, जिन्हें बंदर ने भूत तो किसी ने चमकती आँखें समझा था।

सभी मिलकर मज़ाक़ में बंदर को छेड़ने लगे - "डरपोक-डरपोक"

बेचारा बंदर झेंपता हुआ वहाँ से भाग निकला।